डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

कबीर : संत, भक्त और समाज – सुधारक

(बीए प्रथम वर्ष हिंदी प्रतिष्ठा द्वितीय प्रश्न – पत्र प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन साहित्य में निर्गुण भक्ति के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि संत कबीर हैं। संत काव्य – परंपरा में इनका स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने एक सच्चे संत के रूप में भरतीय समाज एवं हिंदी काव्य को नवीन मार्ग दिखलाया। समाज को नयी दिशा प्रदान की। समाज और धर्म से कुरीति, अंधविश्वास, आडंबर इत्यादि को दूर करने का प्रयास किया। धार्मिक समन्वय का महत्व समझाते हुए हिन्दू – मुस्लिम एकता का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने संत, भक्त, कवि के साथ – साथ समाज – सुधारक की भूमिका भी निभाई। अपने क्रांतिकारी, स्पष्टवादी और निर्भीक व्यक्तित्व से समाज और साहित्य को समृद्ध किया है, साथ ही गौरवान्वित भी। व्यक्तित्व से कबीर महात्मा थे, ईश्वर के नाम सुमिरन में लीन रहते थे। समाज – सुधार हेतु सदैव तत्पर रहते थे। विद्वानों ने कबीर के ग्रंथों की संख्या सत्तावन से लेकर इकसठ तक मानी है, परंतु सर्वसम्मति से प्रमाणिक ग्रंथ के रूप में 'बीजक' को ही विद्वानों ने स्वीकार किया है। कबीर निर्गुण पंथ को माननेवाले थे, वे एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे, शंकराचार्य के अद्वैतवाद का भी इनपर बहुत प्रभाव था। वे जातिगत भेदभाव का विरोध करते थे, अपनी अनेक उक्तियों में उन्होंने जातिगत आधार पर किए जाने वाले भेदभाव का विरोध किया -

1."जाति न पूछिए साधु की पूछ लीजिए ज्ञान

मोल करो तरुआरि का पड़ी रहन दो म्यान"

2. "साकत बाभन ना मिले वैष्णव मिलै चंडाल

गले माल दै भेंटिए मानौ मिले गोपाल"

3. "जाति – पाँति पूछै नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई"

कबीर के काव्य में भक्ति, प्रेम और सामाजिक चिंतन दिखाई पड़ता है। इनकी प्रेमभावना रहस्यवाद कहलाती है, जिसमें ये ब्रम्ह को पति और आत्मा को पत्नी के रूप में चित्रित करते हैं। इनकी प्रेमभावना प्रेममार्गी कवियों से इस अर्थ में भिन्न है कि वे आत्मा को प्रेमी और परमात्मा को प्रेमिका के रूप में चित्रित वकरते हैं तो ये आत्मा को प्रेमिका और परमात्मा को प्रेमी के रूप में चित्रित करते हैं। कबीर जितने बड़े संत हैं, भक्त हैं, उतने ही बड़े कवि हैं और सचमुच एक सच्चे समाज – सुधारक हैं।

भक्ति – आंदोलन मध्यकाल की सबसे प्रमुख घटना है। इस आंदोलन को कबीर ने सुधारवादी काव्य के माध्यम से बल प्रदान किया। कबीर चूँकि मध्यकाल के क्रांतिकारी कवि थे तो उन्होंने अपने दायित्व को बखूबी निभाया। वे सच्चे अर्थों में समाज – सुधारक थे। तथ्यों को कसौटी बनाकर, देख - परखकर अपनी बात रखते थे। सत्य को सर्वोपरि मानते थे। मध्यकालीन परिवेश राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से पतनोन्मुख होता जा रहा था।

समाज, धर्म और राजनीति में अनेक प्रकार की विकृतियां आ गई थीं। समाज ह्रासोन्मुख होता जा रहा था। इन सबके परिणामस्वरूप सामाजिक जीवन में नैतिकता का स्तर बहुत नीचे गिर गया था।

कबीर अपनी दृष्टि एवं उक्तियों से समाज में मानवता की भावना को बल प्रदान कर रहे थे। कबीर ने स्वयं साक्षर नहीं होने का जिक्र किया है –

“मसि कागद छूयो नहीं कलम गही नहीं हाथ।”

उनका जीवन – अनुभव, संवेदनशीलता, परदुःखकातरता उन्हें सच्चे अर्थों में मानवतावादी बनाता है। उन्होंने पतनोन्मुख समाज के उद्धार हेतु स्वयं को प्रस्तुत किया। वे जितने प्रतिभाशाली थे उतने ही सरल – हृदय भी थे। उन्होंने सदैव एक संत का जीवन जिया, ईश्वर की भक्ति करते रहे तथा समाज के लिए अपना जीवन पूरी तरह समर्पित कर दिया। निश्चित रूप से कवि कबीर संत, भक्त, कवि और समाज – सुधारक हैं।